KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/ APR-JUN (2018)/VOL-5/ISS-2/A5 PAGE NO. 30-34
ISSN: 2348- 4349 IMPACT FACTOR (2018) – 8.0121
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला एवम् पर्यटन

(ग्वालियर के किले के सास - बहु मन्दिर के विशेष संदर्भ में)

[1]Dr. ANAND KUMAR SHARMA
[1]M.A. (Aihca), M.A. (History)
Phd Ugc Net (History) & (Ind.Culture), Mpslet (History)

सारांश

ग्वालियर भारत का प्रमुख ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं पर्यटन नगर है। ग्वालियर अपने संमृद्ध ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहरों के लिए पर्यटकों के बीच खासा प्रसिद्ध है। ग्वालियर में अनेक प्राचीन मन्दिर एवं स्थापत्य कला के स्मारक है, जोकि पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है। इनमें ग्वालियर के किले पर स्थित सास– बहु मन्दिर कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला की अद्भुत कृति है। सास – बहु मन्दिर का निर्माण कच्छपघात शासक महिपाल ने 1093 ई० में करवाया था। सास– बहु मन्दिर में से सास मंदिर में मंदिर स्थापत्य कला के अंगों में मुखमण्डप (मुख चतुष्की), सभा मण्डप (रंग मण्डप), अंतराल और गर्भगृह विद्यमान है। सास– बहु मन्दिर में से बहु मंदिर का मुख चतुष्की और गुढ़ मण्डप (सभामण्डप) वर्तमान में बचा है, शेष बहु मंदिर नष्ट हो गया है।

मुख्य बिन्दुः– *कच्छपघात, सास– बहु मन्दिर, मंदिर स्थापत्य कला एवं पर्यटन*

ग्वालियर भारत का प्रमुख ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं पर्यटन नगर है। ग्वालियर मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में 25^0 43′ – 26^0 21′ उत्तरी अक्षांश से 77^0 40′ – 78^0 39′ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। ग्वालियर राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 03 (आगरा – बम्बई) एवं राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 75 (इटावा – झाँसी) तथा उत्तरी – मध्य रेल्वे के दिल्ली – भोपाल रेलमार्ग के द्वारा देश से जुड़ा हुआ है। ग्वालियर में अनेक प्राचीन मन्दिर एवं स्थापत्य कला के स्मारक है, जोकि पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है। इनमें ग्वालियर के किले पर स्थित सास – बहु मन्दिर कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला की अद्भुत कृति है। यह अपनी अद्भुत स्थापत्य एवं शिल्पकला से पर्यटकों को सहज ही आकर्षित करता है। ग्वालियर के किले पर सास – बहु मन्दिर का निर्माण कच्छपघात शासक पद्मपाल और महिपाल द्वारा कराया गया। वस्तुतः सास – बहु मन्दिर का निर्माण कच्छपघात शासक पद्मपाल ने प्रारंभ कराया और महिपाल ने इसे पूर्ण किया। सास बहू मंदिर में लगे अभिलेख के अनुसार, मंदिर का निर्माण विक्रम संवत् 1150 (1093 ई०) में महिपाल ने कराया था।

कच्छपघात राजवंश

आधुनिक मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग के भौगोलिक क्षेत्र में 10 – 12 शताब्दी ई० में कच्छपघात शासकों का प्रादुर्भाव हुआ। कच्छपघातों की तीन शाखाएँ इस भौगोलिक क्षेत्र में विकसित हुई। सिहोनिया (सुहानिया, सिंहपाणनी) शाखा, नरवर शाखा (आधुनिक नरवर, जिला शिवपुरी) तथा दूबकुण्ड (आधुनिक श्योपुर जिला) की शाखा थी। *ग्वालियर में सिहोनिया (सुहानिया, सिंहपाणनी) शाखा ने अपना आधिपत्य स्थापित किया।* गुर्जर प्रतिहारों के पतन के बाद चंदेलों के सामंतों के रूप में इन तीनों शाखाओं ने शासन किया और बाद में स्वतंत्र शासक के रूप में अपना अस्तित्व स्थापित किया। कच्छपघातों की उत्पत्ति के संदर्भ में व्यापक मतभेद है, बहुत

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

संभव है कि कच्छपघात गुर्जरों से संबंधित रहे हों और गुर्जर – प्रतिहारों के पतन से पूर्व इनके अधीन आठवीं–नवीं शताब्दी में इनका विकास शनैः – शनैः हुआ हो और कालान्तर में इन्होंने कच्छपघात राजवंश रूप में अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम कर लिया हो।

कच्छपघात मंदिर स्थापत्य कला

इस विचार के पक्ष में यह तर्क भी दिया जा सकता है कि, मंदिर स्थापत्य कलाशैली (कच्छपघात कालीन) पर गुर्जर प्रतिहार मंदिर स्थापत्य कलाशैली का प्रभाव स्पष्ट दिखता है, क्योंकि ग्वालियर क्षेत्र में कच्छपघातों के पूर्व 'मंडपिका शैली' के मंदिर मिलते है, किन्तु कच्छपघात शैली के मंदिर विकसित मिलते है, अतः क्षेत्रीय विकास की अवधारणा से यह तथा हटके (पृथक) है, इसलिए यह कहा जा सकता है, कच्छपघातों की मंदिर स्थापत्य शैली का मूल विचार आधार गुर्जर – प्रतिहार मंदिर स्थापत्य शैली रही हो। कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला शैली के मंदिर सुरवाया, पढ़ावली, सुहानिया, कद्वाहा, दुबकुण्ड, मितावली, ग्वालियर आदि स्थलों पर मिलते हैं। कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला शैली के मंदिरों को ऊँची जगती पर बनाया गया है, इन मंदिरों में गर्भगृह, अंतराल, मण्डप का निर्माण सामान्यतः मिलता है, इस शैली के विकसित मंदिरों में मण्डप के पार्श्वभाग एवं अर्धमण्डल (मुखमण्डप) मिलता है।

सास – बहु मंदिर

ग्वालियर के किले पर स्थित सास – बहु मंदिर कच्छपघात मंदिर स्थापत्य कला का सर्वोत्तम उदाहरण है। सास – बहु मंदिर, दो मंदिरों का समूह है, बड़ा मंदिर 'सास मंदिर' एवं छोटा मंदिर 'बहु मंदिर' के नाम से जाना जाता है। इन मंदिरों का निर्माण कच्छपघात शासक पद्मपाल ने प्रारंभ कराया और महिपाल ने इसे पूर्ण किया। सास – बहू मंदिर अभिलेख के अनुसार, मंदिर का निर्माण विक्रम संवत् 1150 (1093 ई०) में महिपाल ने कराया। *बैकुंठ – विष्णु* को समर्पित मुख्य मंदिर तथा छोटा मंदिर लक्ष्मी, कृष्ण के पौत्र अनिरूद्ध तथा उनकी पत्नी ऊषा को समर्पित होने के कारण सास – बहू मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जैसाकि, सास – बहु मंदिर अभिलेख में वर्णित है कि, यह मंदिर पांचरात्र और धारणा (पंचवीर) को समर्पित है। *सास मंदिर* (जो बड़ा एवं मुख्य मंदिर है), कच्छपघात मंदिर स्थापत्य कला का चर्मोत्कर्ष का प्रतीक है। सास मंदिर में मंदिर स्थापत्य कला के अंगों में मुखमण्डप (मुख चतुष्की), सभा मण्डप (रंग मण्डप), अंतराल और गर्भगृह विद्यमान है। मंदिर का शिखर नष्ट हो गया है एवं जंघा भाग भी मौलिक नहीं है। मंदिर का संरक्षण एवं संवर्धन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा कराया गया है। यह मंदिर सास मंदिर बलुआ पत्थर से निर्मित है।

अधिष्ठान एवं सोपान

सास मंदिर ऊँचें अधिष्ठान पर निर्मित है। कच्छपघात मंदिर स्थापत्य कला के मंदिर प्रायः ऊँचें अधिष्ठानों पर ही निर्मित है। कच्छपघातों ने अपने काल के लगभग सभी मंदिर प्रायः ऊँचें और भव्य बनाये है। सास मंदिर का अधिष्ठान अधिक अलंकृत नहीं है, फिर भी अधिष्ठान पर गजधर, नरधर आदि अलंकरण मिलते है। अधिष्ठान पर सोपानों (सीढ़ियों) का निर्माण किया गया है, जिनके द्वारा मंदिर में प्रवेश किया जाता है।

मुख चतुष्की (मुख मण्डप)

मंदिर की मुख चतुष्की (मुख मण्डप) दो तलों से युक्त है, जो दो सामने के स्तम्भों और दो भिस्ति स्तम्भों पर आधारित है। मुख चतुष्की के दोनों पार्श्वों में कक्षासन बने हैं, जिस पर दो – दो कुड्य स्तम्भ धरणि को संभालते हुए प्रदर्शित है। मंदिर के मुख मण्डप में ही अभिलेख लगा हुआ है। मुख चतुष्की में चंद्रशिला निर्मित है। मुख चतुष्की की तरह ही शेष दो दिशाओं में भी एक मुख चतुष्की भी निर्मित हैं।

अर्धमण्डप

मुख चतुष्की के बाद अर्धमण्डप निर्मित है। अर्धमण्डप का प्रवेश द्वार, जोकि मुख चतुष्की से मंदिर में प्रवेश के लिए निर्मित है, पंचशाखा युक्त है। इसके ललाट बिम्ब पर ब्रह्मा, बिष्णु, महेश की प्रतिमाऐं अंकित है। इसके वितान (छत) को अष्टकोणीय बनाने का प्रयास किया गया है यह दो तलों से युक्त है। इसके अलंकरणों पर चालुक्य प्रभाव दृष्टिगत होता है ।

रंग मण्डल (सभा मण्डप)

मंदिर में अर्धमण्डप के बाद रंग मण्डल (सभा मण्डप) या गूढ़ मण्डप है, यह तीन तलों से युक्त है, जोकि चार विशाल द्वादश कोणीय स्तम्भ एवं बारह कुड्य स्तंभों से युक्त है। इसका वितान, 'क्षिप्त – वितान' प्रकार का है। रंग मण्डल (सभा मण्डप) के पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशा में मुख मण्डप निर्मित है।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

अंतराल

मंदिर में रंग मण्डल (सभा मण्डप) के बाद अंतराल बना हुआ है। मंदिर का अंतराल आयताकार बना है। अंतराल की छत चार स्तम्भों पर निर्मित है।

गर्भगृह

मंदिर का गर्भगृह, वर्गाकार है। गर्भगृह का प्रवेश द्वार सप्तशाखा युक्त है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर गंगा – यमुना अपने अनुचरों सहित अंकित है। गर्भगृह के ललाट बिम्ब पर 'गरूड़' मानव रूप से अंकित है।

बहु मंदिर

गर्भगृह में 'बैकुंठ – विष्णु' की मूर्ति स्थापित थी। सास मंदिर के दाहिनें तरफ एक लघु मंदिर स्थित है, जिसे बहु का मंदिर कहा जाता है इसमें एक मुख चतुष्की और गुढ़ मण्डप (सभामण्डप) वर्तमान में शेष है। मंदिर ऊँचे अधिष्ठान पर निर्मित है। यह छोटा मंदिर लक्ष्मी, कृष्ण के पौत्र अनिरूद्ध तथा उनकी पत्नी ऊषा को समर्पित होने के कारण बहू मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। यह बहू मंदिर बलुआ पत्थर से निर्मित है।

मानमंदिर

इसे 1486 से 1517 के बीच ग्वालियर के प्रतापी राजा मानसिंह तोमर द्वारा बनवाया गया था। सुन्दर रंगीन टाइलों से सजे इस किले की समय ने भव्यता छीनी जरूर है किन्तु इसके कुछ आन्तरिक व बाह्य हिस्सों में इन नीली, पीली, हरी, सफेद टाइल्स द्वारा बनाई उत्कृष्ट कलाकृतियों के अवशेष अब भी इस किले के भव्य अतीत का पता देते हैं।राजा मानसिंह तोमर पराक्रमी योद्धा होने के साथ ही ललित कला प्रेमी व स्थापत्य शैली के जानकार भी थे।उनके शासनकाल को ग्वालियर का स्वर्ण युग कहा जाता है।इस किले के विशाल कक्षों में अतीत आज भी स्पंदित है। यहां जालीदार दीवारों से बना संगीत कक्ष है, जिनके पीछे बने जनाना कक्षों में राज परिवार की स्त्रियां संगीत सभाओं का आनंद लेतीं और संगीत सीखतीं थीं। इस महल के तहखानों में एक कैदखाना है, इतिहास कहता है कि औरंगजेब ने यहां अपने भाई मुराद को कैद रखवाया था और बाद में उसे समाप्त करवा दिया। जौहर कुण्ड भी यहां स्थित है। इसके अतिरिक्त किले में इस शहर के प्रथम शासक के नाम से एक कुण्ड है श सूरज कुण्ड। नवीं शती में गुर्जर प्रतिहार वंश द्वारा निर्मित एक अद्वितीय स्थापत्यकला का नमूना विष्णु जी का तेली का मन्दिर है, जो कि 100 फीट की ऊंचाई का है। यह द्रविड स्थापत्य और आर्य स्थापत्य का बेजोड़ संगम है। भगवान विष्णु का ही एक और मन्दिर है श्सहस्रबाहु का मन्दिरश जिसे अब सास–बहू का मंदिर नाम से भी जानते हैं। इसके अलावा यहां एक सुन्दर गुरूद्वारा है जो सिखों के छठे गुरू गुरू हरगोबिन्द जी की स्मृति में निर्मित हुआ, जिन्हें जहांगीर ने दो वर्षों तक यहां बन्दी बना कर रखा था।

चित्र:1 मानमंदिर

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

पर्यटन

सास – बहु मन्दिर, मंदिर स्थापत्य कला की अद्भुत कृति है। यह अपनी अद्भुत स्थापत्य एवं शिल्पकला से पर्यटकों को सहज ही आकर्षित करता है। सास – बहु मन्दिर ग्वालियर में पर्यटक का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ प्रतिदिन हजारों की संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक भ्रमण के लिए आते है। इससे भारी मात्रा में धन मिल रहा है तथा स्थानीय लोगों को बड़ी संख्या में रोजगार मिल रहा है। सेन्ड स्टोन से बना यह किला शहर की हर दिशा से दिखाई देता और शहर का प्रमुखतम स्मारक है। एक उँचे पठार पर बने इस किले तक पहुंचने के लिये एक बेहद ऊंची चढाई वाली पतली सडक से होकर जाना होता है। इस सडक के आसपास की बडी–बडी चट्टानों पर जैन तीर्थकंरों की विशाल मूर्तियां बेहद खूबसूरती से और बारीकी से गढी गई हैं। किले की तीन सौ फीट उंचाई इस किले के अविजित होने की गवाह है। इस किले के भीतरी हिस्सों में मध्यकालीन स्थापत्य के अद्भुत नमूने स्थित हैं। पन्द्रहवीं शताब्दि में निर्मित गूजरी महल उनमें से एक है जो राजा मानसिंह और गूजरी रानी मृगनयनी के गहन प्रेम का प्रतीक है। इस महल के बाहरी भाग को उसके मूल स्वरूप में राज्य के पुरातत्व विभाग ने सप्रयास सुरक्षित रखा है किन्तु आन्तरिक हिस्से को संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया है जहां दुर्लभ प्राचीन मूर्तियां रखी गई हैं जो कार्बन डेटिंग के अनुसार प्रथम शती ए डी की हैं। ये दुर्लभ मूर्तियां ग्वालियर के आसपास के इलाकों से प्राप्त हुई हैं। ग्वालियर का किला से आगरा 120कि.मी. दूर स्थित है।

पर्यटन में वृद्धि के सुझाव

1. सुशिक्षित एवं प्रशिक्षित गाइडों की व्यवस्था होना चाहिए।
2. पर्यटन मनोवृति का विकास करना आवश्यक है।
3. उचित सुरक्षा व्यवस्था होना चाहिए।
4. ग्वालियर के किले पर जाने के लिए पृथक से उचित यातायात व्यवस्था स्थापित होना चाहिए।
5. पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाओं का विकास होना चाहिए।
6. सास – बहु मन्दिर की व्यापक प्रचार – प्रसार करके ब्राइंडिग करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- कृष्णन्, व0 सु0 – मध्य प्रदेश जिला गजेटियर ग्वालियर, भोपाल, 1968, पृ०, 01
2- इण्डियन एण्टिक्वेरी, भाग 15, पृ0 37
3- इण्डियन एण्टिक्वेरी, भाग 15, पृ0 39, शर्मा, डॉ० आनन्द कुमार – कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला (ग्वालियर किले के सास – बहु मन्दिर के विशेष संदर्भ में), शोध पत्र, राष्ट्रीय शोध सेमीनार, 25 – 26 सितम्बर, 2011, संचालक पुरातत्व, अभिलेखगार एवं संग्रहालय, उत्तरी क्षेत्र, ग्वालियर, मध्य प्रदेश
4- शर्मा, डॉ० आनन्द कुमार – कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला (ग्वालियर किले के सास – बहु मन्दिर के विशेष संदर्भ में), शोध पत्र, राष्ट्रीय शोध सेमीनार, 25 – 26 सतम्बर, 2011, संचालक पुरातत्व, अभिलेखगार एवं संग्रहालय, उत्तरी क्षेत्र, ग्वालियर, मध्य प्रदेश
5- देव, कृष्ण – उत्तर भारत के मंदिर, नई दिल्ली, 1969, पृ0 46 – 60, सिंह, अमर – ग्वालियर दुर्ग, मंदिर एवं मूर्तियाँ, लखनऊ, 1996, पृ0 71 – 72
6- इण्डियन एण्टिक्वेरी, भाग 15, पृ0 36 – 39, मिश्र, आर0 एन0 – भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, नई दिल्ली, 2002, पृ0 288, मिश्र, आर0 एन0 – दि रिडिल ऑफ सास बहू टेम्पल, रतन परिभू तथा अन्य (संपा0) – वैष्णाविज्म इन इंडियन आर्ट एण्ड कल्चर, नई दिल्ली, 1987, पृ0 70 – 80
7- शर्मा, डॉ० आनन्द कुमार – कच्छपघात कालीन मंदिर स्थापत्य कला (ग्वालियर किले के सास – बहु मन्दिर के विशेष संदर्भ में), शोध पत्र, राष्ट्रीय शोध सेमीनार, 25 – 26 सितम्बर, 2011, संचालक पुरातत्व, अभिलेखगार एवं संग्रहालय, उत्तरी क्षेत्र, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

ग्वालियर के किले का सास - बहु मंदिर

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org